अंक - 24वां

वर्ष - 6वां

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

विशेष दीपावली पोस्टर

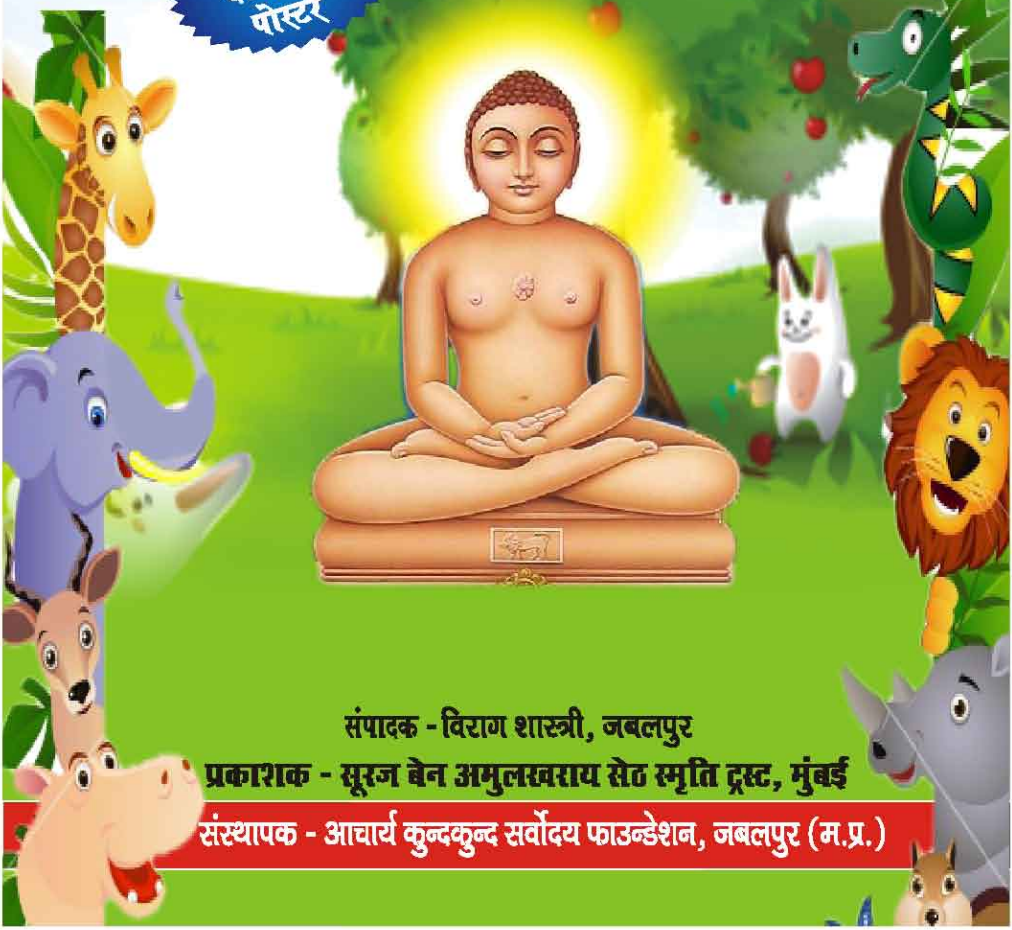

संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई

संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

आध्यात्मिक, तात्विक,धार्मिक एवं नैतिक

बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

प्रकाशक
श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई

संस्थापक
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.

संपादक
विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रबंध संपादक
स्वस्ति विराग जैन, जबलपुर

प्रकाशकीय प्रबंधक
श्री मनीष जैन 'मंगलम्', जबलपुर

डिजाइन/ ग्राफिक्स
गुरूदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमसंरक्षक
श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई
श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा

संरक्षक
श्री आलोक जैन, कानपुर
श्री सुनीलभाई. जे. शाह, भायंदर, मुम्बई

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
''चहकती चेतना''
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 09373294684
chehaktichetna@yahoo.com

1.	संपादकीय	1
2.	साहस को सलाम	2
3.	हमारे तीर्थ	3
4.	पटाखे का पुरस्कार	4
5.	अनोखा पर्व	5-7
6.	बोन चायना	8
7.	आयु शेष	9
8.	परिणामों का फल	10-11
9.	सच्चा मित्र	12
10.	प्रेरक प्रसंग -	13
11.	कैसा ये त्यौहार	14
12.	भक्तामर स्त्रोत	15-16
13.	आपके प्रश्न हमारे उत्तर	17
14.	समाचार कोना	18-19
15.	चाँदी वर्क	20
16.	वह कौन सा स्थान	21
17.	कॉमिक्स	22-23
18.	जन्म दिवस	24
19.	मनुष्य पर्याय बर्बाद करते लोग	25
20.	विराधना का फल	26-27
21.	जन्म दिवस	28

सदस्यता शुल्क - 400 रू. (तीन वर्ष हेतु)
1200 रू. (दस वर्ष हेतु)

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें

www.vitragvani.com

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप ''चहकती चेतना'' के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से ''चहकती चेतना'' के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक,फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106

संपादकीय

प्यारे बच्चो! आपको जय जिनेन्द्र के साथ वीर निर्वाण महोत्सव की मंगलमयी शुभकामनायें। यह पर्व समस्त जीवों के लिये मंगलकारी संदेश के साथ प्रेरणा भी देता है। यह अहिंसा के सम्राट भगवान महावीर का निर्वाण महोत्सव है। सारे विश्व में भगवान महावीर जैनों की पहचान के रूप में जाने जाते हैं। भगवान महावीर को अहिंसा के सबसे बड़े प्रचारक के रूप में भी जाना जाता है। पर हमारे लिये सबसे आनंद की बात यह है कि इस दिन उन्होंने समस्त कर्मों का अभाव करके मुक्ति को प्राप्त किया था। परन्तु आश्चर्य की बात है कि आज अन्य लोगों के साथ जैन समाज के लाखों लोग इस दिन पटाखे फोड़कर भयंकर हिंसा करके अनंत जीवों का घात करते हैं। यह भगवान महावीर का सम्मान नहीं बल्कि घोर अपमान है।

उत्तम व्यक्ति वे हैं कि जो दूसरों के सुख से सुखी होते हैं, मध्यम वे हैं जो अपने सुख से सुखी हैं, वे महापापी हैं जो अपने आनंद के लिये दूसरों के दुखी करने में जरा भी संकोच नहीं करते। मात्र पटाखे फूटने की आवाज सुनने के लिये और आतिशबाजी की रंगीन किरणें देखने के लिये अनंत जीवों को मारना कौन सा न्याय है ?

बच्चो! आपसे निवेदन है कि आप इन पटाखों से दूर ही रहना। जब आप का मन पटाखे फोड़ने का हो तो आप निर्दोष जीवों की पीड़ा याद करना। हमने आपके लिये एक पोस्टर भी दिया है। आप स्वयं पटाखे नहीं फोड़ने की प्रतिज्ञा करना और अपने भाई–बहिनों और मित्रों को भी पटाखे न फोड़ने की प्रेरणा देना।

यही इस पावन पर्व का संदेश है।

आपका
विराग

इनके साहस को सलाम

दिल में साहस हो तो कठिनाईयों को जीतना आसान है। इनको देखकर हिम्मत बढ़ती है कि जीवन कितना अमूल्य है इसका सदुपयोग कर लेना चाहिये।

सोचिये क्या हमारी समस्या इनसे अधिक है ?

चीन की इस बच्ची के दोनों पैर एक दुर्घटना में कट गये। लेकिन हौसला नहीं टूटा फिर खड़ी हो गई अपने सपनों को पूरा करने के लिये

हाथ नहीं तो क्या हुआ ?
मेरे जीने के साहस को कोई चुनौती नहीं दे सकता।

हार नहीं मानूंगा। दोनों हाथ न होने के बाद भी पैरों से लिखकर परीक्षा देता यह युवक।

तीर्थक्षेत्र

दिलवाड़ा
जैन मंदिर

विश्व के आश्चर्यों में गिना जाने वाले दिलवाड़ा के जैन मंदिर अपनी कलात्मक रचना के लिये विश्वविख्यात हैं। दिलवाड़ा माउंट आबू पर्वत से लगभग डेढ़ किमी पहाड़ चोटी पर है। आबू पर्वत अजमेर- अहमदाबाद लाइन पर आबू रोड स्टेशन से 19 किमी पहाड़ी रास्ते की चढ़ाई पर है। अपने प्राकृतिक सौन्दर्य के लिये विख्यात आबू पर्वत भारतवर्ष का प्रमुख पर्यटन केन्द्र है। यहाँ के जिनमंदिर शिल्पकला के सर्वश्रेष्ठ प्रमाण हैं। ये संगमरमर के बने हुये हैं। इनके स्तम्भों, तोरण, झूमर आदि को देखकर लगता है कि मानों कला की किसी देवी ने स्वयं पत्थर का रूप ले लिया हो।

इन मंदिरों का निर्माण वस्तुपाल और तेजपाल नाम के दो मंत्री भाईयों ने सन् 1100-1200 में करवाया था। आज लगभग 850 वर्ष पूर्व उन्होंने इन मंदिरों के निर्माण के लिये 14 करोड़ स्वर्ण मुद्रायें व्यय की थीं। इस मंदिर के निर्माण में 1500 शिल्पियों और 1200 श्रमिकों ने कार्य किया। वस्तुपाल मंत्री ने अपने गुजराज राज्य को बचाने के लिये जीवन में 63 बार युद्ध में सेना का संचालन किया। भारत सरकार ने दिलवाड़ा के जैन मंदिर पर 14 अक्टूबर 2009 को डाक टिकिट प्रकाशित किया।

पटाखे जलाने का पुरस्कार

पटाखे जलाओगे तो ऐसे ही जाओगे साथ में
भयंकर पाप बंध फ्री !

1. पटाखे जलाये तो पूरे ही जल गये। पति का अपराध पत्नी के आंसू

2. एक बड़े बम को हाथ में लेकर फोड़ने का फल – पूरा चेहरा ही ब्लास्ट हो गया।

3. एक राकेट सीधे आंख में आकर लगा – एक आंख जिन्दगी भर के लिये खराब हो गई। क्या आप ये चाहते हैं ?

4. पटाखे की फैक्ट्री में काम करने से हर वर्ष हजारों लोगों को भयंकर बीमारी हो जाती हैं। यदि आप पटाखे जलायेंगे तो हमें भी अनुमोदना का पाप लगेगा।

अनोखा पर्व

वर्धमान वन में काफी चहल–पहल हो रही थी। सभी जानवर अपने घर की सफाई में जुटे हुये थे। कोई सफाई कर रहा था तो कोई अपने घर की पुताई कर रहा था। चीकू खरगोश अपने घर का सजाने के लिये रंग–बिरंगी झंडियां ला रहा था, जम्बो हाथी अपनी लम्बी सूंड़ में पानी भरकर अपने बच्चों को नहला रहा था। सुमति गाय पूजन की सामग्री धो रही थी। तभी मुक्ति वन की पोस्टमेन चीनू चिड़िया एक पत्र देने के लिये वर्धमान वन आयी तो वहां का उल्लास का वातावरण देखकर उसे बहुत प्रसन्नता हुई। वह पत्र बांटते हुये रोशनी लोमड़ी के यहाँ पहुँची। लोमड़ी को आवाज देते हुये वह जैसे ही घर के अंदर पहुंचा तो अंदर एक बैग में बहुत सारे पटाखे देखकर उसे बहुत आश्चर्य हुआ। वह कुछ बोलती इससे पहले ही लोमड़ी ने चीनू बहिन से कहा – आओ चीनू बहिन ! आज बहुत दिनों बाद आना हुआ। कोई खास बात है क्या ? चीनू ने कहा –हाँ लोमड़ी बहन! आपको तो पता ही है कि हमारे यहाँ भगवान महावीर का निर्वाण दिन दीपावली आ रहा है। आपके वन में तो कितना आनंद का वातावरण है। हमारे महाराज दर्शन सिंह ने आप सभी वर्धमान वन वाले जानवरों को इस मंगलमयी निर्वाण पर्व पर शुभकामनायें दीं हैं।

यह तो बहुत आनंद की बात है। आप भी हम सबकी ओर से महाराज को और समस्त मुक्ति वन के सारे जानवरों को दीपावली की शुभकामनायें देना। रोशनी लोमड़ी ने हाथ हिलाते हुये कहा। वैसे आपके यहाँ क्या कार्यक्रम है ? चीनू ने लोमड़ी से पूछा।

अरे चीनू बहन ! हमारे वन में तो बहुत मस्ती होगी, सुबह पूजन होगी, फिर खूब–खायेंगे, पियेंगे, पटाखे फोड़ेंगे और जमकर नाचेंगे। – लोमड़ी ने आंखें हिलाते हुये कहा।

अच्छा! तो पापों का कार्यक्रम है। – चीनू चिड़िया ने व्यंग्य करते हुये कहा।

मतलब ऽऽऽ ! – लोमड़ी ने आश्चर्य से और तेज आवाज में पूछा। लोमड़ी की आवाज सुनकर आसपास के सारे जानवर एकत्रित होकर उनकी बात सुनने लगे।

चीनू ने समझाते हुये कहा – देखो लोमड़ी बहन! नाराज न होना। आपके यहाँ जो कार्यक्रम हैं उससे तो लगता है जैसे आपके वन में किसी का विवाह हो रहा है, भगवान महावीर का निर्वाण महोत्सव नहीं।

मैं कुछ समझी नहीं! – लोमड़ी ने जिज्ञासा से पूछा। सभी जानवर उनकी इस चर्चा को ध्यान से सुन रहे थे।

चीनू ने शांति से समझाते हुये कहा – आपको पता है भगवान महावीर को अहिंसा सिद्धान्त के लिये जाना जाता है। उनका सारा जीवन त्याग और साधना में व्यतीत हुआ। गृहस्थ अवस्था में भी वे अत्यंत वैरागी थे। उन्होंने विवाह नहीं किया। पूरे विश्व को अहिंसा, सत्य और पापों से विरक्त होने का उपदेश दिया और आप उनके नाम पर ही हिंसा और पाप कर रहे हैं।

सभी जानवर बोले – कैसे ? ये तो आनंद का पर्व है।

अरे भाई! यह मौज–मस्ती का नहीं उनके जीवन से प्रेरणा लेने का पर्व है। पटाखे फोड़कर आप अनंत जीवों की हत्या करेंगे। आप पटाखे फोडेंगे और उसकी आवाज से हमारे भाई–बहनों की चोट लगेगी, कोई जल जायेगा, किसी की आंख खराब हो जायेगी, किसी के सुनने की ताकत समाप्त हो जायेगी। क्या किसी को दुःख देकर आप पर्व मनायेंगे ?

नहीं – जम्बो हाथी ने जोर से कहा। फिर आप ही बतायें हम क्या करें ?

चीनू ने कहा – हमारे मुक्ति वन में दीपावली पर सुबह 5 बजे सामूहिक जिनेन्द्र भक्ति होगी, फिर पूजन होगी और पूजन के बाद विशेष ज्ञानी श्री जिनय जिराफ जी का प्रवचन होगा। शाम को भी भक्ति के बाद प्रवचन और सांस्कृतिक कार्यक्रम होंगे। इन कार्यक्रमों में हम सभी भगवान महावीर के जीवन को प्रस्तुत करेंगे और प्रार्थना करेंगे कि संसार के समस्त प्राणियों को सद्बुद्धि मिले, कोई दुःखी न हो। सभी जीव आत्म ज्ञान प्राप्त कर भगवान महावीर जैसे बन जायें।

अरे वाह! मोला मालू ने मुस्कराते हुये कहा। ये कार्यक्रम तो हम भी कर सकते हैं।

तभी राजा दहाड़ सिंह ने आदेश दिया कि हमारे वर्धमान वन में भी वीर निर्वाण महोत्सव धार्मिक आयोजनपूर्वक मनाया जायेगा। किसी तरह के पटाखे नहीं फोड़े जायेंगे।

रोशनी लोमड़ी अपने पटाखे का बैग कचरे में डालते हुये बोली। बोलो भगवान महावीर स्वामी की जय। अहिंसा पर्व की जय।

– स्वस्ति जैन, जबलपुर

क्या बोन चाइना क्राकरी का प्रयोग करते हैं तो इनकी हत्या के जिम्मेदार हैं आप -

हमारे घरों में भोजन, चाय–नाश्ते आदि में कप, प्लेट का प्रयोग किया जाता है। कई घरों में चीनी मिट्टी के कप का प्रयोग होता है। पिछले कई वर्षों से बोन चाइना क्राकरी के उपयोग का का फैशन चल रहा है। कई क्राकरी पर बोन चाइना लिखा हुआ होता है। देखने में सुन्दर और पतली कप–प्लेटें बहुत पसंद की जा रही हैं। पर आपको पता है कि ये बोन चाइना से बनती हैं। बोन चाइना एक प्रकार की पोर्सिलेन होती है जिसमें गाय–बैल की की हड्डियों का राख पाउडर मुख्य रूप से होती है। बोन चाइना के बर्तन बहुत पतले होते हैं। इसकी विशेषता है कि यह बहुत सफेद होती है और आंशिक रूप से इसे आर –पार देखा जा सकता है। चाइना को खोज सबसे पहले चीन ने की। वह इंग्लैंड ने सर्वप्रथम 1748 में इसका आयात कर इसका प्रयोग किया। बोनचाइना का पता लगाने का सबसे आसान तरीका है कि आप बोन चाइना के बर्तन को अपने हाथ में लेकर रोशनी के पास ले जायें और अपना हाथ उसके पीछे की ओर रखें। यदि आपको अपनी उँगली इसमें दिखाई देती हैं तो वह बोन चाइना है। हड्डियों के कारण ही इसे सफेदी मिलती है। इसके लिये हर वर्ष न जाने कितने पशुओं को मार दिया जाता है। इनकी हड्डियों का पाउडर मिलाने से बोन चाइना मजबूत और सुन्दर हो जाता है । तो क्या करेंगे आप स्वयं निर्णय करें –

इस सम्बन्ध में भारत सरकार की पूर्व पर्यावरण मंत्री श्रीमति मेनका गांधी का लेख प्राप्त करने के लिये आप अपना E-mail No. हमें 9300642434 पर SMS करें।

जिसकी आयु शेष है मार सके ना कोय

जिसकी आयु बाकी है उसे विश्व की कोई शक्ति या घटना उसे नहीं मार सकती। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण मध्यप्रदेश के इटारसी में। जुलाई माह में छिन्दवाड़ा जिले के माचेघाट गांव में रहने वाली कविता कतिया छिन्दवाड़ा से इंदौर जा रही थी। वह गर्भवती थी। वह पेंचवेली एक्सप्रेस के जनरल कोच में बैठी थी। इटारसी पहुँचने पर अचानक उसे पेट में दर्द उठा तो वह ट्रेन के शौचालय चली गई और उसने वहाँ एक बेटे को जन्म दिया। वह बालक शौचालय से निकलकर पटरी पर गिर गया। ट्रेन थोड़ा आगे बढ़ गई। लोगों के शोर करने पर ट्रेन रोकी गई और वापस रेल्वे पटरी पर आकर देखा तो वह बच्चा वहाँ सुरक्षित था। फिर स्टेशन के डिप्टी एस एस जेपी.दुबे ने तत्काल एंबुलेंस बुलाई और बालक और उसकी मां को हॉस्पिटल भेजा। मां और बालक दोनों स्वस्थ हैं।

इस बालक को देखिये – यह 20 दिन का बालक है। इसकी मां राधिका धन्वन्तरि इसे अपनी गोद में लेकर राजेन्द्र नगर से इंदौर आई थीं। इंदौर के मुख्य रेल्वे स्टेशन से दूसरी ट्रेन का इंतजार कर रही थीं। तभी एक दूसरे प्लेटफार्म पर एक ट्रेन आई तो वह इस बच्चे को लेकर ट्रेन पकड़ने के लिये पटरी से ही जाने लगी। तभी दूसरी ओर से आ रहे धीमी गति से आ रही ट्रेन के इंजन उसे टक्कर मार दी। राधिका अपने बालक सहित पटरी के बीच में जाकर गिरी। सभी यात्री यह देखकर सहम गये। जैसे ही पूरी ट्रेन निकल गई तो वह महिला अपने बच्चे को लेकर खड़ी हो गई। सभी उसे जीवित देखकर आश्चर्यचकित रह गये। राधिका को हाथ – पैर में कुछ चोट लगी, परन्तु इस बालक को जरा भी चोट नहीं आई। जिसकी आयु शेष है मार सके ना कोय।

– समाचार पत्र दैनिक भास्कर से साभार

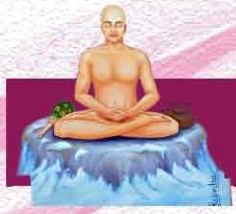

परिणामों का फल

जो जीव जैसी भावना करता है उसे वैसा फल निश्चित ही मिलता है। एक सूत्र है - भावना भवनाशिनी - भावना भववर्धिनी। इसलिये हमें हमेशा अच्छे परिणाम रखना चाहिये। पुराण ग्रन्थों के आधार से कुछ उदाहरण -

1. राजकुमार मृगध्वज भैसों को मारकर उनका मांस खाया करता था। कुछ समय बाद उसे अपनी गल्ती का एहसास हो गया। वह राजकुमार मुनि व्रत धारण कर घोर तप करने लगा और अपनी वैराग्य भावना के फल में उसने मोक्ष प्राप्त किया।

2. राजा वसुदेव ने अपने भाई की पुत्री देवकी से विवाह किया। उन दोनों के छः पुत्रों ने आत्मभावना के बल पर उसी भव से मोक्ष प्राप्त किया। इन्हीं चाचा-भतीजी का एक पुत्र महाप्रतापी नारायण श्रीकष्ण के नाम से प्रसिद्ध हुआ जो अगले भव से मुक्ति प्राप्त करेगा।

3. राजकुमारी विशालाक्षी ने एक मुनि का अपमान करने के लिये उन पर थूक दिया। इस महापाप से वह मरकर अत्यंत बदसूरत लड़की की पर्याय में उत्पन्न हुई। बाद में सोलह कारण भावना का सच्चे मन से चिन्तवन करने के कारण वह सोलहवें स्वर्ग में देव हुई और यही जीव वर्तमान में विदेह क्षेत्र में सीमंधर भगवान के रूप में विराजमान है।

4. एक गांव के मुखिया सुदास को बकरों की बलि देने का बहुत शौक था। उसने मरते समय अपने पुत्र वसुदास को बुलाकर एक नियम दिलाया कि मेरे मरने के बाद भी तुम बकरों की बलि देना चालू रखोगे। वसुदास ने अपने पिता की आज्ञा का पालन किया। सुदास मुखिया ने मरने के बाद 8 बार बकरे की पर्याय में जन्म लिया। सात बार उसके ही पुत्र ने

उसकी बलि दी। आठवीं बार जब उसे बलि के ले जाया जा रहा था तो रास्ते में एक मुनि के उपदेश से पिता-पुत्र को सही बात का ज्ञान हो गया। तब आत्मकल्याण की भावना में लीन होकर वसुदास ने मुनि दीक्षा ले ली और बकरे ने श्रावक के व्रत धारण कर लिये।

5. लक्ष्मीमति बहुत सुन्दर थी। अपनी सुन्दरता के घमंड में उसने एक मुनि की निन्दा की, जिसके फल में वह अनेक बार पशु जन्म धारण करने के बाद नीच कुल की पूतगन्धिका नाम की कन्या हुई। उसके बाद उन्हीं मुनि के उपदेश को सुनकर उसने बारह भावनाओं का चिन्तन किया और क्षुल्लिका हुई। फिर समाधिमरण पूर्वक देह को छोड़कर स्वर्ग की देवी हुई।

6. चण्डवर्मा नाम एक चाण्डाल था। वह अपराधियों को फांसी देने का कार्य करता था। एक मुनिराज के अहिंसा उपदेश से प्रभावित होकर वह श्रावक बन गया।

7. पूर्णभद्र और मणिभद्र जब भी एक चाण्डाल और एक कुतिया को देखते थे तो उनका स्नेह उमड़ने लगता था। इसका कारण एक मुनिराज ने बताया कि वह चाण्डाल और वह कुतिया पूर्व जन्म में पूर्णभद्र और मणिभद्र के माता-पिता थे। यह सुनकर दोनों भाइयों ने चाण्डाल और कुतिया को धर्मोपदेश दिया जिसके प्रभाव से चाण्डाल मरकर नंदीश्वर द्वीप में देव हुआ और कुतिया ने राजा की पुत्री के रूप में जन्म लिया।

8. भोजन सामग्री को जूठा करने के कारण एक कुत्ते को कुछ लोगों ने बहुत पीटा। उस कुत्ते को मरते हुये देखकर जीवन्धर स्वामी ने णमोकार मंत्र सुनाया और धर्मोपदेश दिया जिसके प्रभाव से वह कुत्ता मरकर देव हुआ।

हमारे शास्त्रों में आये ऐसे सैकड़ों उदाहरण इस बात को सिद्ध करते हैं कि जीव को उसके परिणामों के अनुसार फल मिलता है। इसलिये हमेशा परिणाम शुभ ही रखने का प्रयास चाहिये।

– सन्मति संदेश से साभार

सच्चा मंत्र

पाटलीपुत्र नगर में शिवभूति मुनिराज आहारचर्या करके लौट रहे थे। उन्हें शास्त्रों का अधिक ज्ञान नहीं था फिर भी उनके परिणाम बहुत निर्मल थे। वे धर्म की मूर्ति थे। मार्ग में मुनिराज की दृष्टि एक महिला पर पड़ी। वह महिला उड़द की दाल धो रही थी। इस कार्य में उड़द की दाल से उसके छिलके अलग होते जा रहे थे। उड़द की दाल की छिलके अलग ही होते हैं। धोने पर वे अलग निकल जाते हैं। इस सामान्य क्रिया ने मुनिराज को दृष्टि प्रदान कर दी। उनके मुख से निकल पड़ा – तुष मास भिन्नम्' अर्थात् छिलका और दाल अलग – अलग हैं।

मुनिराज इस क्रिया को अपनी आत्मा पर घटित कर रहे थे कि जैसे यह दाल-छिलका अलग हैं वैसे ही आत्मा और शरीर अलग-अलग होते हैं। उनको इस वाक्य की रटन लग गई। आत्मा और शरीर की भिन्नता का अनुभव करते हुये आत्मा में लीन हो गये। वे बहुत कम समय में चार घातिया कर्मों का नाश कर केवलज्ञानी अरहंत परमात्मा बन गये।

जिसके संसार का अंत नजदीक आ जाता है उसे सम्यक् ज्ञान के लिये कोई न कोई प्रबल निमित्त मिल ही जाता है।

आईये आप इस प्रकार बाल संस्कार अभियान में सहभागी बनें

शिरोमणि परम संरक्षक	–	1,00,000/-
परम संरक्षक	–	51,000/-
संरक्षक	–	31,000/-
परम सहायक	–	21,000/-
सहायक	–	11,000/-
सहायक सदस्य	–	5,000/-
सदस्य	–	1,000/-

प्रत्येक सहयोगी को (सदस्य छोडकर) चहकती चेतना पत्रिका का आजीवन सदस्य बनाया जायेगा। आप अपनी सहयोग अथवा सदस्यता राशि "चहकती चेतना" के नाम से ड्राफ्ट अथवा चैक बनाकर प्रेषित करें। आप यह राशि चहकती चेतना के पंजाब नेशनल बैंक, जबलपुर के बचत खाता क्रमांक 1937000101030106 में जमा करा सकते हैं। राशि जमा करने की सूचना हमें अवश्य देवें। आप यह राशि चहकती चेतना के नाम से ड्राफ्ट / चैक के माध्यम से भी भेज सकते हैं।

हमारा पता - चहकती चेतना, बंगला नं. 50, लाल रोड, बेलतगांव रास्ता,
पो. देवलाली जि. नासिक 422401 महा.
मोबाइल नं. 9373294684 (विराग शास्त्री)

कैसा गर्व

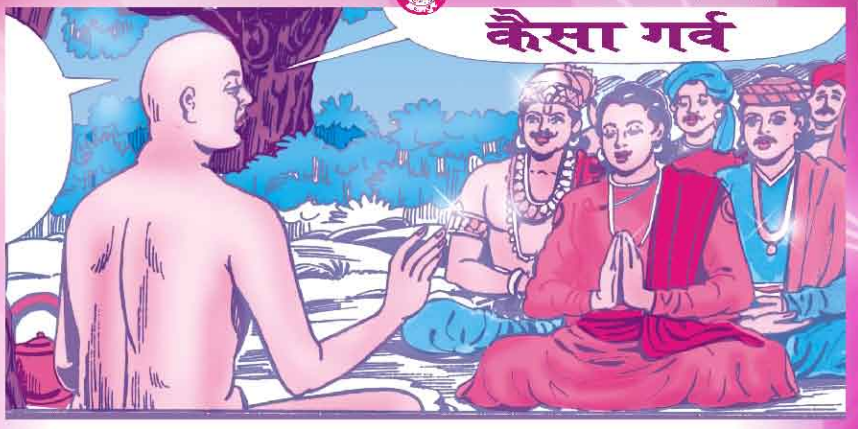

एक सम्राट मुनिराज के पास उपदेश सुनने के लिये पहुँचे। सम्राट ने बड़े गर्व से अपना परिचय दिया।

मुनिराज ने सम्राट से पूछा - 'तुम रेगिस्तान में भटक जाओ और तुम्हें जोर से प्यास लगी हो, वहाँ पानी की बूंद भी न हो। प्यास से तुम्हारे प्राण निकलने लगें और उस वक्त कोई व्यक्ति तुम्हें आधा गिलास गंदा पानी लाकर तुम्हें दे और तुमसे कहे कि - ' इस आधे गिलास पानी का मूल्य आधा राज्य है। ' तो तुम क्या करोगे ?

सम्राट ने कहा - मैं तुरन्त आधा राज्य देकर वह पानी ले लूंगा।

फिर मुनिराज ने पूछा - वह गंदा पानी पीकर तुम बीमार हो जाओ और तुम्हारे पेट में कोई भयंकर रोग हो जाये। जीवन की कोई आशा न हो और कोई तुमसे कहे कि आधा राज्य दे दो तो मैं तुम्हें ठीक कर सकता हूँ तो तुम क्या करोगे ?

सम्राट बोला - उसे आधा राज्य देकर अपने प्राणों की रक्षा करूँगा। जब जीवन ही नहीं होगा तो राज्य किस काम आयेगा ?

तब मुनिराज ने समझाया कि - जो राज्य एक गिलास गंदे पानी और उससे उत्पन्न हुये रोग के इलाज में समाप्त हो जाये - ऐसे तुच्छ राज्य पर घमंड कैसा ?

सम्राट ने यह सुनकर शर्म से अपनी आंखें नीचे कर लीं।

– श्रीमती श्वेता सौरभ जैन, इंदौर

कैसा ये त्यौहार

एक दिवस बोले सब प्राणी
अपने साथी संग से
घर से बाहर नहीं निकलना
बचना चाहो मौत से
खटमल, मच्छर, मक्खी कांपे
गाय,बैल, पशु, भैंस भी
कीड़े थर-थर कांप रहे थे
भाग रहे थे सांप भी
कॉकरोच तो रोता फिरता
करे विनय भगवान से
मुझे बचा लो दयानाथ जी
मुझे प्रेम है प्राण से
चेतन भैया पूछे उससे
कहो आज क्या बात है
क्या कोई प्रलय आ गया
या आया यमराज है
कॉकरोच यूं रोता बोला -
चेतन भैया क्या बतलाऊँ
सर पर मौत सवार है
वीर प्रभु निर्वाण महोत्सव
दीवाली त्यौहार है
कॉकरोच तू नहीं जानता
यह तो पर्व महान है
जियो जीने दो कहने वाले
महावीर भगवान हैं
सत्य अहिंसा के उदघोषक
का निर्वाण महान है
निर्भय होकर रहो जगत में
तू इससे अनजान है।
कॉकरोच बोला यूं रोते
नहीं समझते बात यही तो
महावीर की जय जय कहते
फटाखे कितने फोड़ते
फटाखे के जलने से
या उसकी आवाज से
जल जाते या मर जाते हम
भाग रहे यमराज से
हम निर्दोष हैं छोटे प्राणी
जीने का अधिकार है
प्राण नहीं दे सकते तो
मारने का क्या अधिकार हे
जल जाओ अग्नि से थोड़ा भी
दुख कितना तुम पाते हो
हम प्राणी का नहीं मूल्य जो
हमको यूं ही जलाते हो
ध्यान रहे ये बात मेरी सुन
जो तुम फटाखे जलाओगे
काल अनंत तक रोना तुम भी
सुखी कभी न हो पाओगे।

रचना - विराग शास्त्री

आचार्य मानुतंग रचित

भक्तामर स्तोत्र

हिन्दी एवं अंग्रेजी पद्यानुवाद-स्व. चक्रेश्वर प्रसाद जैन, नकुड़ (उ.प्र.)

इसके पूर्व के अंकों में 42 छन्दों का हिन्दी - अंग्रेजी अनुवाद पढ़ चुके हैं, अब आगे -

43

भालों से घायल गज शोणित का जब बहता हो दरिया।
कैसे इसको पार करें हों चकित भीम से योद्धा।
ऐसे युद्ध में पक्ष, प्रभु हों, जिनका बलशाली दुर्जय।
तेरे चरण कमल आश्रित हैं, पा जाते उन पर भी जय।।

Pools filled with blood of elephants,
Heroes impatient to cross,
Those who are invincible, my Lord,
Thine own manvanquish them sure.

44

सागर तूफां आया हो मगर समूह का भी हो भय।
बड़वानल भी उसमें हो प्रज्वलित, किन्तु होकर निर्भय।
आसमान तक ऊँची लहरों पर से यान की ले जाये।
शुद्ध हृदय से हे प्रभु, वे जो नाम तेरा सुमर पाये।

Sea, Full of crocodiles whirl - pools,
And fire-raging therein wild,
Breakers rising mountain top high,
Ship steered safely by thy name.

45

जो कि जलोदर सी भी व्याधि से हो पीड़ित, परमेश।
शोचनीय हो गई अवस्था जीवन की आशा न हो शेष।
तेरे चरण कमल रज अमृत को यदि धारे वे तन पर।
मदन रूप क्षण में उनका हो स्वस्थ रहें फिर जीवन भर।।

Those suffering badly from dropsy.
And no hope of surviving,
Cupid - like attein perfact health.
By rbbing dirt of thy feet.

46

जंजीरों से जकड़ा जिनका तन हो सर से पांवों तक।
बन्धन इतने दृढ़ हो जिनसे घायल हो गई जांघों तक।
यदि ऐसे बन्दी जपते हैं तेरे नाम मंत्र की माल।
निःसन्देह वे हो जाते हैं बन्धन मुक्त स्वयं तत्काल।

Iron chains,that bind up bodies,
And even wound thinghs of men,
Drop off aotomatically,
By chanting thy name O'lord.

47

मस्त हाथी हो या शेर भयंकर क्षुभित सिन्धु या सर्प कराल।
भीषण युद्ध, जलोदर दारुण, बन्धन, प्रलय काल की ज्वाल।
हो जाते हैं मुक्त हर इक संकट के भय से वे मतिमान।
भक्तामर स्तोत्र का करते हैं जो पाठ सतत् उर आन।

Elephant, tigar, fire, battle,
Serpent, sea sickness and chains,
No more afraid of these, O'lord,
Are wise men who read this hymm.

48

गुण डोरी से ग्रंथित है यह विभु तेरी रम्य स्तुति माला।
मनहर अनुपम पुष्पों का चकेश्वर इसमें उजियाला।
कण्ठ में धारण करते हैं जो शुद्ध हदय से यह माला।
"मानतुंग" नर को पाती है, ऐसे शिव लक्ष्मी वाला।।

Withs fresh flowers of various hues.
I made werath of virtues,
Those who put it on thier hearts.
Attain new prosperity.

THE END

आपके प्रश्न - हमारे उत्तर

1. प्रश्न – क्या सम्यग्दृष्टि बीमार होने पर दूसरे का खून अपने शरीर में चढ़ा सकता है ?

उत्तर – नहीं। जब प्राण बचाने के लिये वह मांस नहीं खा सकता तो दूसरे के खून का प्रयोग कैसे कर सकता है ?

2. प्रश्न – तीर्थंकरों का रक्त कौन से रंग का होता है और क्यों ?

उत्तर – तीर्थंकरों का रक्त सफेद रंग का होता है क्योंकि तीर्थंकर में विश्व कल्याण की तीव्र भावना होती है और उन्हें किसी जीव या वस्तु से राग–द्वेष नहीं होता।

3. प्रश्न – पद्मावती माता के सिर पर विराजमान भगवान पार्श्वनाथ पूज्य हैं या नहीं ?

उत्तर – एक स्त्री के सिर पर भगवान विराजमान होना शास्त्र विरुद्ध है। पद्मावती की पूजन या वंदन से गृहीत मिथ्यात्व का पाप होता है।

4. प्रश्न – मुनिराज रात में किस प्रकार सोते हैं ?

उत्तर – मुनिराज रात में एक करवट सोते हैं, वे पैरों को मोड़कर नहीं सो सकते। बहुत कम समय की निद्रा होती है और किसी प्रकार के वस्त्र, चटाई, घास आदि का प्रयोग नहीं कर सकते। ऐसा सागार धर्मामृत में कथन है।

5. प्रश्न – क्या तीर्थंकर महावीर को सर्प ने काटा था ?

उत्तर – ऐसा श्वेताम्बर शास्त्रों में उल्लेख आता है। तीर्थंकर मुनिराजों पर कोई उपसर्ग नहीं कर सकता।

6. प्रश्न – पर्व और त्यौहार में क्या अन्तर है ?

उत्तर – पर्व में विषय भोगों का त्याग कर संयम से रहा जाता है और त्यौहार में खाने–पीने आदि व्यवहार किया जाता है।

7. प्रश्न – क्या गृहस्थ को आत्मज्ञान हो सकता है ?

उत्तर – जब पशु को आत्म ज्ञान हो सकता है तो गृहस्थ को क्यों नहीं। अवश्य हो सकता है।

8. प्रश्न – क्या शुद्ध कुर्ता पायजामा पहनकर भगवान का प्रक्षाल किया जा सकता है ?

उत्तर – नहीं। भगवान का प्रक्षाल मात्र शुद्ध धोती–दुपट्टा पहनकर ही किया जा सकता है। कुर्ता–पायजामा हमारी जैन संस्कृति नहीं है।

करहल में बाल शिविर की सफलता का प्रभाव

मई माह में सकल दिगम्बर जैन समाज करहल द्वारा आयोजित बाल संस्कार शिविर की सफलता का प्रभाव व्यापक रूप से हुआ है। इस शिविर में लगभग 700 बच्चों ने सहभागिता की थी। शिविर के चार माह बाद भी अनेक बालक-बालिकाओं के फोन आ रहे हैं जो शिविर में लिये गये नियम के बारे में अपना संकल्प व्यक्त कर रहे हैं। अनेक बच्चों ने रात्रि भोजन त्याग, जमीकंद त्याग, बाजार के टॉफी-बिस्किट का त्याग आदि नियम लिये थे। हमें प्रसन्नता है कि ये कम उम्र के बच्चे महान जैन धर्म को समझते हुये इन नियमों का पालन कर पापों से बच रहे हैं।

इस शिविर आयोजन में करहल की जैन समाज के साथ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन करहल शाखा का महत्वपूर्ण योगदान था। समाज के किशोर और युवाओं ने अकल्पनीय श्रम किया और इस शिविर को सफलता के चरम तक पहुँचाया। ऐसे संगठन पर समाज को गर्व है। - संपादक

तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ लघु विधान छपकर तैयार

जैन धर्म के तेइसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ की भक्ति स्वरूप तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ लघु विधान छपकर तैयार हो गया है। इस विधान में पूजन के साथ भगवान के पंचकल्याणक के अर्घ्य, अन्य अर्घ्य और स्तवन आदि के मनोहारी छन्द हैं। सरल भाषा में लिखित यह विधान मात्र 1 घंटे की अवधि में पूरा किया जा सकता है। भगवान के कल्याणकों के अवसर पर अथवा विशेष प्रसंग पर करने योग्य यह विधान अत्यंत सुन्दर है। इसकी रचना विराग शास्त्री जबलपुर ने की है। इसका प्रकाशन सम्मेदशिखर में होने वाले पंचकल्याणक के सौधर्म इन्द्र श्री अजित जैन बड़ौदा की ओर से किया गया है ।

संपूर्ण समयसार ग्रन्थ अब वीडियो के रूप में

अध्यात्मप्रेमी समाज के सर्वाधिक प्रिय महान ग्रन्थ समयसार को अब वीडियो के रूप में तैयार किया जा रहा है। आचार्य कुन्दकुन्द के पांच परमागम ग्रन्थों से एक समयसार ग्रन्थ को अध्यात्म का सर्वोत्तम ग्रन्थ माना गया है। आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजी स्वामी ने इस ग्रन्थ पर 19 बार सभा में व्याख्यान किये और स्वयं के स्वाध्याय में सैंकड़ों बार इसे पढ़ा, क्षुल्लक वर्णीजी को यह ग्रन्थ अत्यंत प्रिय था। इस ग्रन्थ को वीडियो के रूप में प्रस्तुत करने के लिये इसकी 415 गाथाओं के विषय पर आधारित 480 चित्र विशेष रूप से तैयार करवाये गये हैं। इनकी गाथाओं का पाठ पण्डित श्री अभयकुमारजी देवलाली के स्वर में, गाथा का पद्यानुवाद मधुर संगीत में और गाथा का अर्थ विशेष रूप से रिकार्ड करवाया गया है। लगभग 9 लाख रूपये की लागत से तैयार होने वाला यह समयसार वीडियो लगभग 9 घंटे का होगा। इस कार्य में इंदौर निवासी श्री सौरभ शास्त्री, श्री गौरव शास्त्री, श्रीमति श्वेता जैन, श्रीमति श्रद्धा जैन पिछले ढ़ाई वर्ष से अथक श्रम कर रहे हैं। इसकी अन्य व्यवस्थायें विराग शास्त्री के द्वारा संपन्न की जा रहीं हैं।

अब धार्मिक कम्प्यूटर गेम भी तैयार

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर विगत कई वर्षों से बाल एवं किशोर वर्ग में जिनधर्म के लिये संस्कारप्रेरक साम्रगी देने का प्रयास कर रहा है। इस क्रम में अब तक 15 वीडियो सी.डी., तीन बाल कविताओं की पुस्तक, दो धार्मिक गेम, एक कहानी का पुस्तक का निर्माण किया जा चुका है। आज की आधुनिक तकनीक के साथ भी बच्चों में धार्मिक संस्कारों का समावेश हो - इस भावना से विराग शास्त्री, जबलपुर के निर्देशन में दो धार्मिक कम्प्यूटर गेम का निर्माण किया जा रहा है। इनमें से एक गेम तीर्थकरों, उनके चिन्हों एवं नवदेवताओं पर आधारित होगा। दूसरा गेम पेन्टिंग पर आधारित होगा। इसमें लगभग 30 धार्मिक फोटो का अपनी कल्पना के अनुसार कम्प्यूटर पर कलर कर सकेंगे। इनमें एक गेम के निर्माण में श्री नितिन जैन, नांगलराया, दिल्ली का आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ है। दूसरे गेम का निर्माण आध्यात्मिक वक्ता मुम्बई बोरीवली के निवासी पण्डित श्री हितेशभाई चौवटिया के अर्थ सहयोग से किया जा रहा है। ये दोनों गेम 24 नवम्बर से सम्मेदशिखर में होने वाले पंचकल्याणक में प्रस्तुत किये जायेंगे।

मुनिराजों के बाईस परीषह अब वीडियो के रूप में

दिगम्बर मुनिराज अर्थात् चलते - फिरते सिद्ध। मुनिराजों के जीवन की प्रत्येक क्रिया आचरण करने योग्य है। मुनिराजों का स्वरूप समझकर ही हम उन जैसा बनने की भावना भा सकते हैं। हमारे शास्त्रों में मुनिराजों के जीवन का स्वरूप बताया गया है। यह जानने पर ही रोमांच उत्पन्न होता है।

दिगम्बर मुनिराज आत्मअनुभव के धारी, 24 परिग्रह से रहित, 28 मूलगुणों के पालक, 22 परीषह के विजेता होते हैं। 22 परीषह के बारे में सामान्यतः लोग कम ही जानते हैं। इन परीषहों का स्वरूप सभी को समझ में आये - इस भावना से धन्य मुनिराज के नाम से एक वीडियो सी.डी. का निर्माण किया जा रहा है। इसमें मुनिराजों की विशेष भक्तियों के साथ 22 परीषह का स्वरूप वीडियो के रूप में प्रदर्शित किया जायेगा। इसका निर्माण इंदौर निवासी श्री सौरभ शास्त्री के मार्गदर्शन में एवं विराग शास्त्री के निर्देशन में किया जा रहा है।

आध्यात्मिक कवि ब्र. रवीन्द्रजी द्वारा रचित आध्यात्मिक रचनाओं की नवीन सी.डी. तैयार

अनेक वैराग्य और आध्यात्मिक रचनाओं के रचनाकार, अनुशासनप्रिय, कुशला वक्ता ब्र.श्री रवीन्द्रजी जैन 'आत्मन्' के नित्य उपयोगी रचनाओं की नई सी.डी. तैयार की गई है। इस सी.डी. में सात्वांनाष्टक, वीतराग पूजन की जयमाला, निर्ग्रन्थ भावना, संकल्प, प्रभात मंगल गीत आदि का समावेश किया गया है। इसमें यथोचित संगीत का प्रयोग किया गया है। इस आडियो सी.डी. का निर्माण श्री खेमचंद जैन सौरभ शास्त्री, खड़ैरी एवं श्रीमती लता सतेन्द्र कुमार जैन, अकलतरा एवं श्री नरेन्द्र जैन, अकलतरा के अर्थ सहयोग से किया गया है। इस कार्य में प्रसिद्ध आध्यात्मिक प्रवक्ता पण्डित श्री अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली, ब्र.बासंतीबेन देवलाली का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है। इसका निर्देशन श्री विराग शास्त्री, जबलपुर द्वारा किया गया है।

इन समस्त सी.डी. को प्राप्त करने के लिये आप संस्था से संपर्क कर सकते हैं। यदि किसी सी.डी. को किसी सामूहिक प्रसंग में वितरण करना चाहते हैं तो वितरणकर्ता का नाम और प्रसंग सी.डी.पर प्रकाशित करने का व्यवस्था संस्था द्वारा की जायेगी।

कंपनी ने भी माना चांदी का वर्क गाय की अंतड़ियों में कूटा जाता है

चहकती चेतना ने कुछ समय पूर्व के अंक में बाजार में मिठाई के ऊपर प्रयोग किये जाने वाले चांदी के वर्क की बारे में एक रिपोर्ट प्रकाशित की थी। अब तक चांदी का वर्क बनाने वाली कंपनियाँ यह स्वीकार नहीं करती थीं कि चांदी का वर्क गाय-बैल की हड्डियों में कूटकर बनाया जाता है। परन्तु अब कंपनियों ने स्वयं इस बात को स्वीकार कर लिया है। इंदौर के रहने वाले पर्यावरण प्रेमी डॉ. सुधीर खेतावत ने इंदौर कोर्ट में एक याचिका दायर की थी। जिसमें गाय-बैल की हड्डियों से चांदी का वर्क बनाये जाने की फोटो शामिल थे। इसके आधार पर चांदी का वर्क बनाने वाली कंपनी को नोटिस दिया गया। नोटिस के जबाब में कंपनी के अधिकारी ने लिखित उत्तर में स्वीकार किया कि असली चांदी का वर्क गाय-बैल की हड्डियों में कूटकर बनाया जाता है। केवल चांदी का वर्क बनाने के लिये प्रत्येक वर्ष 1 लाख 16 हजार का गायों और बैलों का वध कर दिया जाता है। इसलिये हे शाकाहारी प्राणियो! इसका त्याग करो और जीव हत्या में निमित्त होने से बचो।

कंपनी ने माना गाय की आंतड़ियों में कूटा जाता है चांदी का वरक

हाई कोर्ट का केंद्र व राज्य शासन को नोटिस

जनता के लिए क्या कर रहे हैं आरटीओ

फोटो भी पेश

आभार

संस्था को सहयोग देने वाले महानुभावों का हार्दिक आभार

11000/- श्री श्रेयांस जैन कोलकाता के सुपुत्र श्री प्रतीक जैन के शुभ विवाह के अवसर पर प्राप्त।

500/- कु. परिधि जैन सुपुत्री श्री संजय जैन, जबलपुर के जन्म दिवस के अवसर पर प्राप्त।

500/- स्व. पण्डित श्री ज्ञानचंद जैन, जबलपुर की सप्तम पुण्य स्मृति में उनके सुपुत्र श्री संजय जैन की ओर से प्राप्त।

वह कौन सा स्थान है

01. वह कौन सा स्थान है जहाँ के जिनमंदिर के शिखर स्वर्ण के बने हैं ?

उत्तर -मदुराई (तमिलनाडु) (जैन डायरी पेज नं. 36)

02. वह कौन सा स्थान है जहाँ सबसे बड़ा मानस्तम्भ बना है ?

उत्तर -अजमेर (राजस्थान) (82 फुट का मानस्तम्भ)

03. वह कौन सा स्थान है जिसे शाश्वत तीर्थ कहा जाता है ?

उत्तर -सम्मेदशिखर

04. वह कौन सा स्थान है जहाँ के वृक्ष भी पंचेन्द्रिय होते हैं ?

उत्तर -नरक।

05. वह कौन सा स्थान है जहाँ पर कभी रात नहीं होती ?

उत्तर -समवशरण।

06. वह कौन सा स्थान है जहाँ निगोद के जीव नहीं हैं ?

उत्तर- अलोकाकाश।

07. वह कौन सा स्थान है जहाँ आज भी तीर्थंकर विराजमान हैं ?

उत्तर -विदेह क्षेत्र।

08. वह कौन सा स्थान है जहाँ शत्रु भी मित्र बन जाते हैं ?

उत्तर -समवशरण।

09. वह कौन सा स्थान है जहाँ आचार्य कुन्दकुन्द ने सात उपवास किये थे ?

उत्तर -विदेह क्षेत्र।

10. वह कौन सा स्थान है जहाँ राम के छोटे भाई शत्रुघ्न ने जिनमंदिर बनवाये थे ?

उत्तर -मथुरा। (जैन धर्म का प्राचीन इतिहास भाग -2, पेज नं. 22)

11. वह कौन सा स्थान है जहाँ 63 जिनालय हैं और जो अतिशय क्षेत्र भी है और सिद्ध क्षेत्र भी ?

उत्तर -कुण्डलपुर जि. दमोह (म.प्र.)

12. वह कौन सा स्थान है जहाँ महावीर की माता त्रिशला की भव्य मूर्ति है ?

उत्तर -गोपाचल पर्वत, ग्वालियर।

– श्रीमती प्रीति संजय जैन, जयपुर

सच्चा त्याग

भव्यो! उत्तम त्याग धर्म के पालन से संसार समुद्र भी पार किया जा सकता है। तभी तो शास्त्रों में त्याग धर्म की अपार महिमा गाई है।
महाराज! अगर हम रुपये पैसे का त्याग कर दें तो एक दिन भी काम न चले त्याग कैसे किया जा सकता है।

एक दिन वह पंडित जी नदी किनारे पहुंचे और...
भैया! हमें नदी के उस पार जाना है। पैसे हमारे पास हैं नहीं। अगर तुम हमें उस पार पहुंचा दो तो बड़ी कृपा होगी।
महाराज मैं ग़रीब मल्लाह हूं। अगर मैं फोकट में ही लोगों को पार पहुंचाता रहूं तो मेरी गृहस्थी कैसे चलेगी?

इतने में आ गए सेठ जी...
अजी पंडित जी यहां क्यों खड़े हो? क्या बात है?
सेठ जी! बात तो कुछ भी नहीं। हमें नदी के उस पार जाना है। यह नाविक बिना पैसे लिये नाव में बिठाता ही नहीं। और पैसे हमारे पास हैं नहीं। हम सोच रहे हैं उस पार न सही। चलो इसी पार सामायिक कर लेंगे।

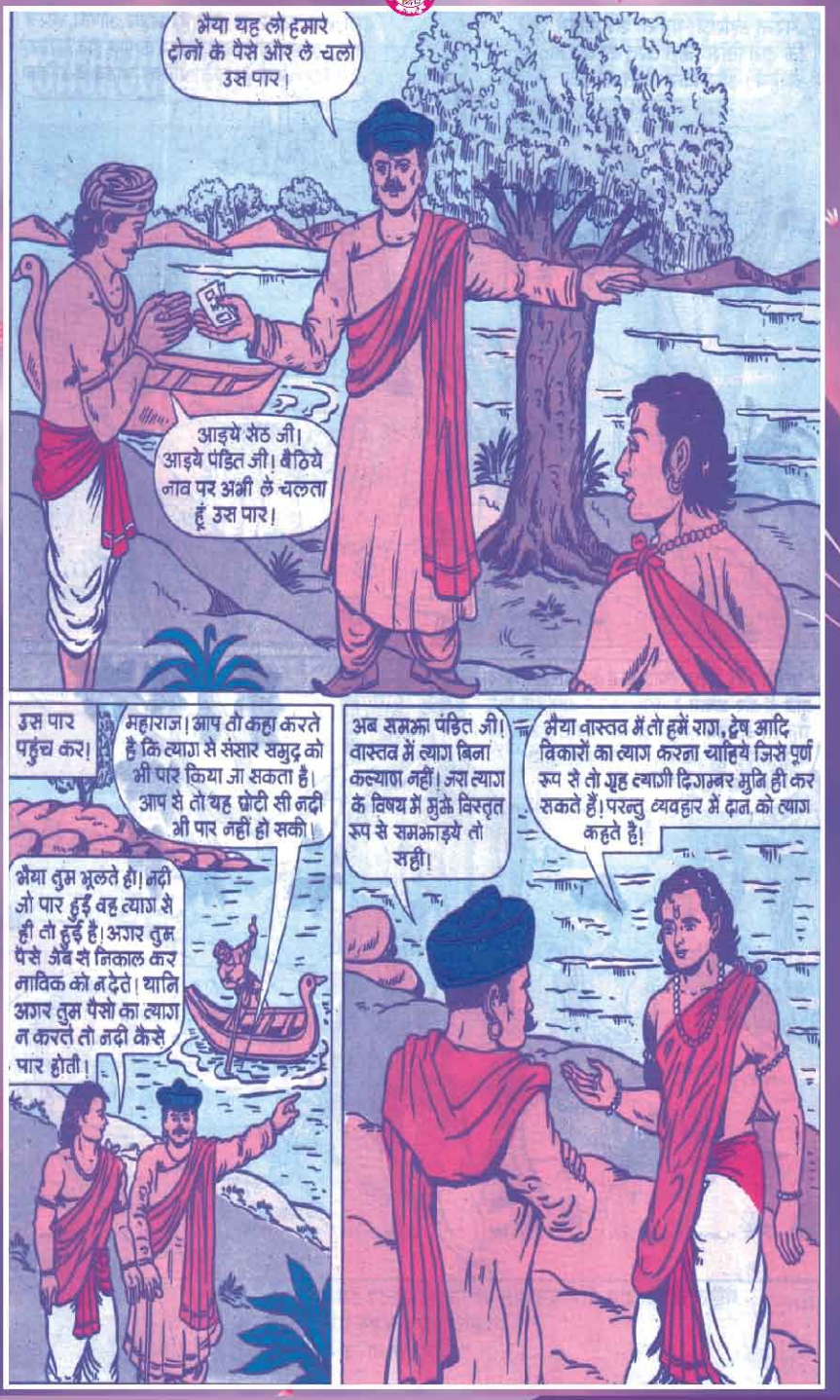
भैया यह लो हमारे दोनों के पैसे और ले चलो उस पार।
आइये सेठ जी। आइये पंडित जी। बैठिये नाव पर अभी ले चलता हूँ उस पार।
उस पार पहुँच कर।
महाराज! आप तो कहा करते है कि त्याग से संसार समुद्र को भी पार किया जा सकता है। आप से तो यह छोटी सी नदी भी पार नहीं हो सकी।
भैया तुम भूलते हो। नदी जो पार हुई वह त्याग से ही तो हुई है। अगर तुम पैसे जॉब से निकाल कर नाविक को न देते। यानि अगर तुम पैसो का त्याग न करते तो नदी कैसे पार होती।
अब समझा पंडित जी। वास्तव में त्याग बिना कल्याण नहीं। अब त्याग के विषय में मुझे विस्तृत रूप से समझाइये तो सही।
भैया वास्तव में तो हमें राग, द्वेष आदि विकारों का त्याग करना चाहिये जिसे पूर्ण रूप से तो गृह त्यागी दिगम्बर मुनि ही कर सकते हैं। परन्तु व्यवहार में दान को त्याग कहते हैं।

मनुष्य पर्याय बरबाद करते लोग

इन्हें देखिये - इस युवक ने तिब्बत पर चीन से आजादी के आंदोलन में विरोध स्वरूप आग लगाकर आत्महत्या कर ली। यह घटना दिल्ली में चीनी दूतावास के सामने हुई। भयंकर पीड़ा सहन करने के बाद इसकी मृत्यु हो गई।

मात्र फैशन के लिये अपने सिर को घोंसला बना लिया।

लोगों से प्रशंसा पाने के लोभ में अपना सिर मगरमच्छ के मुंह में डाले हुये महिला।

मात्र दिखावे के लिये सिर के बालों को चूहे का रूप दे दिया।

सारी जिन्दगी समस्यायें झेलकर नाखून लम्बे किये। बस रिकार्ड के लिये।

लोग कहें वाह! बस इसीलिये घंटों बैठकर चेहरा पर रंग करवाती महिला।

....देखो - देखो जीव की विराधना का फल

जिन जीवों ने सच्चे देव-शास्त्र-गुरु को भूलकर पाप किये, आत्म स्वरूप को नहीं जाना उन्हें भयंकर दुःख भोगना पड़ता है। इसलिये पापों से बचिये वरना आपका कल भी ऐसा हो सकता है -

यह फोटो है इंडोनेशिया निवासी तीन वर्षीय अनार्गिया अडिला का। इसे हाइड्रोसैफेलस नाम की बीमारी हो गई है। इस असामान्य बीमारी में मनुष्य की रीढ़ की हड्डी में बनने वाले द्रव्य का प्रवाह उसके दिमाग में ठीक तरह से नहीं हो पाता। मस्तिष्क में इस द्रव्य के अधिक मात्रा में एकत्रित हो जाने के कारण सिर का आकार खतरनाक ढंग से बढ़ जाता है। यह बच्ची न तो चल पाती है ना ही बैठ पाती है। कुछ शब्द ही बोलती है। यह बीमारी हजारों बच्चों में किसी एक होती है।

2. इस बच्ची को देखिये। इसके पूरे शरीर पर कितने बाल हैं। यह एक बीमारी के कारण होता है। इस बीमारी के कारण साथी बच्चे इससे बात नहीं करते, न ही इसके साथ खेलते हैं। ये कैसा बचपन?

3. इस जन्म लिये बालक को देखिये। यह जिन्दगी और मौत से संघर्ष कर रहा है। यह दिल शरीर के बाहर है। डॉक्टर इसका इलाज करने का पूरा प्रयास कर रहे हैं।

चेतो-चेतो आराधना में मत बनो निर्बल

4. इस महिला का चेहरा एक बीमारी के कारण इतना बड़ा हो गया। मानो! दूसरों की सुन्दरता से ईर्ष्या करने का दंड मिला।

5. देखो! अधिक मोह का फल। एक शरीर में दो चेहरे।

6. काश! मैंने अपने आत्म स्वरूप का अपमान किया होता। मेरा चेहरा देखो। पता नहीं किन पापों का फल है ये।

7. अभी जन्मे इस बालक ने कौनसे पाप किये, जिसे जन्म लेते ही ऐसा भयंकर रोग हो गया। यह है पूर्व जन्म किये गये पापों का फल। इसलिये सावधान। अपने परिणामों को संभालो।

पंडित धानत राय जी ने इस बात को कितने सुन्दर ढंग से कहा है:-

" धनि साधु शास्त्र अभय दिवैया, त्याग राग विरोध को,
" बिन दान श्रावक साधु दोनों लै हैं नाहिं बोधि को।"

अब एक फोन लगाइये और
घर बैठे सी.डी. पाइये

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन जबलपुर द्वारा विगत 12 वर्षों से बाल एवं युवा वर्ग में जिनधर्म के संस्कार प्रेरक साम्रगी का निर्माण कर रहा है। इस क्रम में अब तक बाल गीतों, पूजन, जिनधर्म की कहानियां, एनीमेशन आदि की 15 वीडियो सी.डी. तैयार की गईं हैं। साथ दो धार्मिक कविताओं की पुस्तक, एक कथा की पुस्तक, दो गेम भी तैयार किये हैं। दो कम्प्यूटर गेम भी तैयार हो गये है ।

हमारी संस्था के प्रतिनिधियों के द्वारा प्रत्येक स्थान पर सी.डी. लेकर पहुंचना संभव नहीं है और पूरे देश के अनेक साधर्मी किसी बड़े धार्मिक कार्यक्रम के अवसर पर ही यह सामग्री प्राप्त कर पाते हैं। हमने आप तक सी.डी. एवं अन्य सामग्री पहुंचाने के लिये के लिये दो योजनायें तैयार की हैं।

पहली योजना में आप हमारे मोबाइल नम्बर पर हमें संपर्क करें, हम आपको आपके द्वारा मांगी गईं सी.डी. तुरन्त भेज देंगे और आप सी.डी. की राशि का भुगतान हमारे बैंक खाते में अपने नजदीकी बैंक शाखा में कर सकते हैं। तो देर किस बात की ? मोबाइल उठाइये और हमसे बात करके पाइये संस्था द्वारा तैयार सी.डी. और साहित्य।

दूसरी योजना के अंतर्गत आप हमारी संस्था के स्थायी सदस्य बन सकते हैं। स्थायी सदस्यता के लिये आपको 5000/- रू. की राशि जमा करना होगा। इसके अंतर्गत आपको 15 वर्षों तक ''चहकती चेतना'' पत्रिका प्राप्त होगी। साथ ही संस्था द्वारा अब तक तैयार समस्त सामग्री आपको भेजी जायेगी तथा आगामी 15 वर्षों में निर्मित होने वाली समस्त सामग्री आपको निःशुल्क भेजी जायेगी। तो देर मत कीजिये। बार-बार सी.डी. मंगाने और सदस्यता शुल्क भरने की झंझट से मुक्ति पाइये।

संपर्क सूत्र

सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम, फूटाताल, जबलपुर 482002 (म.प्र.)
मोबा. 9300642434, 09373294684, E-mail : chehaktichetna@yahoo.com

धर्म का पालन कर पायेंगे ?

अतः जियो और जीने दो का
अमर संदेश देने वाले भगवान
महावीर के निर्वाण दिवस पर हिंसा का तांडव
मत करिये। राम, बुध्द, नानक एवं संतों - महापुरूषों
के अहिंसा संदेश का पालन कीजिए । सुख शांति के पर्व
दीपावली पर अन्य जीवों के लिये यमराज न बनें ।